

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमङ्गलश्लोकरामायणम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीमङ्गलश्लोकरामायणम् ॥

सर्लोकशरण्याय साकेतपुरवासिने।  
सत्सेरिताय रामाय ससीतायास्तु मङ्गलम् ॥ 1 ॥

कौसल्यायां दशरथाज्जाताय परमात्मने।  
सदा भरतसौमित्रिशक्रुश्लेशाय मङ्गलम् ॥ 2 ॥

कौशिकक्रतुरक्षार्थं कृत्वा मारीचमर्दनम्।  
अहल्यापापनाशाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ 3 ॥

भक्तृरा शैरं पुरा चापं प्राप्य सीतामनुत्तमाम्।  
अयोध्यामागतायास्तु गुणपूर्णाय मङ्गलम् ॥ 4 ॥

पितुः सत्यप्रतिज्ञायै कैकेय्या रचनादपि।  
चित्रकूटनिरासाय सीतारामाय मङ्गलम् ॥ 5 ॥

पादुके भरते याते दत्त्वा राज्यस्य पालने।  
दण्डकारण्यरासाय धैर्ययुक्ताय मङ्गलम् ॥ 6 ॥

हंरा रिराधं बलिनं मुनीनां भारितात्मनाम्।  
दत्ताभयाय रामाय पद्माक्षयास्तु मङ्गलम् ॥ 7 ॥

चतुर्दशसहस्राणां रक्षसां क्रूरकर्मणाम्।  
खरदूषणमुख्यानां हारिणेहस्तु सुमङ्गलम् ॥ 8 ॥

सीतादर्शनयुक्ताय गृध्रमोक्षप्रकाशिने।  
कवकहारिणे तस्मै राघवायास्तु मङ्गलम् ॥ 9 ॥

শবর্যা দত্তপূজায় সেরিতায় হনুমতা।  
সুগ্রীরকৃতসখ্যায় ধৈর্যযুক্তায় মঙ্গলম্ ॥ 10 ॥

রালিনং বলিনং হংরা সুগ্রীরমভিষিচ্য চ।  
রর্ষরাত্রনিরাসায় রামচন্দ্রায় মঙ্গলম্ ॥ 11 ॥

কালাতিক্রমণাচ্চৈর কুপিতায় মহাত্মনে।  
আগতে সতি সুগ্রীরে প্রসন্নায়াস্তু মঙ্গলম্ ॥ 12 ॥

অঙ্গুলীযপ্রদাত্রে চ হনুমতি মহাত্মনে।  
সীতাং দৃষ্টরাগতে তস্মিন্ হর্ষযুক্তায় মঙ্গলম্ ॥ 13 ॥

অশোকরনিকামধ্যে শ্ৰংরা সীতাং হনুমতা।  
সুগ্রীরকৃতযানায় রঘুনাথায় মঙ্গলম্ ॥ 14 ॥

অথাগতং মহাত্মানমভিষিচ্য রিভীষণম্।  
কৃতসাগরবন্ধায় সানুজায়াস্তু মঙ্গলম্ ॥ 15 ॥

সেতুনা সুখমাসাদ্য লঙ্কাং রারণপালিতাম্।  
সুরেলগিরিরাসায় রণধীরায় মঙ্গলম্ ॥ 16 ॥

সুগ্রীরেণ দশগ্রীরে মুষ্টিযুদ্ধেন মুচ্ছিতে।  
ইন্দ্রজিৎনাগবন্ধায় রিমুক্তায়াস্তু মঙ্গলম্ ॥ 17 ॥

ধুম্রাক্ষে রায়ুপুত্রেণ রজ্রদংষ্ট্রেহঙ্গদেন চ।  
প্রহস্তুে নীলনিহতে হর্ষযুক্তায় মঙ্গলম্ ॥ 18 ॥

নযতোষধিশৈলেন্দ্রং হনুমতি মহাত্মনে।  
ব্রহ্মাস্ত্রবন্ধযুক্তায় রিমুক্তায়াস্তু মঙ্গলম্ ॥ 19 ॥

রারণিং চ হতং শ্ৰংরা লক্ষ্মণেন মহাবলম্।  
নিহত্য মকরাক্ষং চ প্রসন্নায়াস্তু মঙ্গলম্ ॥ 20 ॥

जिह्वा रारणकोटीरं कुम्भकर्णं निहत्य च।  
अतिकायं हतं श्फुरा प्रीतियुक्ताय मङ्गलम् ॥ 21 ॥

ततो मूलबलं हत्रा रारणं च महाबलात्।  
रिजयं प्राप्य ह्रष्टाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ 22 ॥

ततोहग्निरचनां सीतां प्राप्य ह्रष्टां यशस्विनीम्।  
ब्रह्मस्तुत्या प्रह्रष्टाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥ 23 ॥

रिडीषणं महात्मानं लङ्कायामभिषिच्य च।  
रानरै रान्कसैः सार्धं पुष्पकस्थाय मङ्गलम् ॥ 24 ॥

मदनाकृतये तस्मै मधुरापुररासिने।  
मनुरंशप्रदीपाय मानरेन्द्राय मङ्गलम् ॥ 25 ॥

प्राप्यायोध्यां च भरतं गङ्गातोयैः सुगन्धिभिः।  
अभिषिक्ताय रामाय ससीतायास्तु मङ्गलम् ॥ 26 ॥

मधुरापुररासाय रसुदेरसुतप्रभुः।  
श्रीराममङ्गलं नित्यं शृण्वतां सुकृतं भवेत् ॥ 27 ॥

एवं राल्मीकिना प्रोक्तं रामायणकथामृतम्।  
यः पठेद्रामचरितं सर्पपापैः प्रमुच्यते ॥ 28 ॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।  
अधनाः सधनाः सन्तु जीरन्तु शरदां शतम् ॥ 29 ॥

॥ इति श्रीमङ्गलश्लोकरामायणं समाप्तम् ॥